RESEARCH COMMUNICATIONS
(An International Open Access, Peer Reviewed, Multidisciplinary Online Journal)
https://research-communications.cmpcollege.ac.in/
ISSN: Under Process
Vol.: 1, Issue: 1, January-June 2023, pp. 20-24

गाँधी का सामाजिक दृष्टिकोण

डॉ पूनम श्रीवास्तव

हिंदी विभाग
सी.एम.पी. डिग्री कॉलेज, इलाहबाद विश्वविद्यालय
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश
ई-मेल: dr.poonamsrivastava1986@gmail.com

सारांश

भारत को आजादी दिलाने में महात्मा गांधी का नाम प्रमुख रूप से दिया जाता है इसके अतिरिक्त गांधी जी को समाज सुधारक के रूप में भी जनमानस ने स्वीकार किया है यह सच है कि महात्मा गांधी ने सत्य अहिंसा सुचिता आदि की जो बातें की इसी के आधार पर समाज की जागरूकता आगे बढ़ी। चाहे समाज हो अथवा साहित्य हो गांधी जी के विचारों का प्रभाव सभी पर पड़ा। उन्होंने इंसानियत के धर्म को बखूबी निभाया। महात्मा गांधी सन् 1920 के आसपास ही भारतीय राजनीति के क्षितिज पर देदीप्यमान होते हैं। उन्होंने अपने आदर्शों के माध्यम से समाज के लिए अनेक मानक बनाए। सर्वोदय का सिद्धांत भी उन्हीं में से एक है। गांधीजी ने आम लोगों की पीड़ा को ना सिर्फ अनुभव किया बल्कि उसको दूर करने का प्रयास भी किया गांधी का सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांत सर्वोदय को ही मानना चाहिए जिसका अर्थ है- सब की प्रगति। सत्य और अहिंसा उनके दो मूल मंत्र हैं। उनकी वैष्णवी भावना सब को एक सूत्र में पिरोती है। वे आत्ममंथन करने वाले व्यक्ति थे। उनके ऊपर रस्किन और टालस्टाय के छाप मिलती है। बीसवीं सदी के गांधी राजनैतिक और समाज सुधारक के रूप में ही नहीं एक मार्गदर्शक के रूप में हमारे सामने आते हैं। पूरी दुनिया बुद्ध के बाद शांति गांधीजी के विचारों से ही प्राप्त होती है। उन्होंने अपनी सारी ऊर्जा एक सद्भाव समाज को बचाने में लगा दी। गांधीजी के विचारों के मूल में स्वावलंबन का भाव था। उन्होंने कुटीर उद्योग की भावना पर बल दिया ताकि गांव की जनता को शहरों की ओर पलायन करने से रोका जा सके। विद्यार्थियों को शिक्षित होने के साथ-साथ स्वावलंबी होने की बात भी गांधीजी ने की है। वे स्वतंत्रता आंदोलन के एक योद्धा थे। उन्होंने भारत को एक नई विचारधारा प्रदान किया। उनका आदर्श विचार भारत ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया के लिए आज भी प्रासंगिक है।

मुख्य शब्द: गाँधी जी, सामाजिक दृष्टिकोण, सत्य और अहिंसा

प्रस्तावना

आधुनिक भारत के निर्माण में महात्मा गांधी का नाम एक विशेष स्थान रखता है। इसके प्रभाव को देखते हुए भारतीय इतिहास के एक महत्वपूर्ण हिस्से को गांधी के नाम से जाना जाता है। यह एक करिश्माई नेता थे जिनके नेतृत्व में 'करो या मरो' तथा 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' जैसे क्रांतिकारी नारा चल पड़ा था। हिंदी साहित्य के प्रमुख हस्ताक्षरो में प्रेमचंद उपन्यासों यथा- कर्मभूमि, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, गबन तथा कहानियों जैसे- नमक का दरोगा, समर यात्रा। अन्य कथाकारों में 'कौशिक', सुदर्शन, भगवती चरण वर्मा एवं जैनेंद्र के नाम लिए जा सकते हैं। कवियों में मैथिलीशरण गुप्त की 'यशोधरा' और 'साकेत' में गांधी जी की विचारों की सशक्त अभिव्यक्ति हुई है। सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', माखनलाल चतुर्वेदी, रामनरेश त्रिपाठी बच्चन, सुमित्रानंदन पंत और दिनकर आदि जैसे कवियों पर गांधीवाद की छाप देखी जा सकती है । भारत का सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक हर पहलू गांधीवाद से आंदोलित हुआ है। आधुनिक भारत के इतिहास के परिपेक्ष में महात्मा गांधी का नाम किसी परिचय का मोहताज नहीं है।

गाँधी जी का व्यक्तित्व

महात्मा गांधी का व्यक्तित्व एक ऐसा व्यक्तित्व है जो अति सामान्य होते हुए भी अति विशेष है जिसकी वजह से आज हम आजाद भारत के खुली हवा में सांस ले रहे हैं। सत्य और अहिंसा के इस पुजारी ने जिसने बिना शस्त्र उठाए तत्कालीन समाज को अंग्रेजों से मुक्त कराया कहा भी गया है-

दे दी हमें आजादी बिना खडक बिना ढाल।
साबरमती के संत तूने कर दिया कमाल।

महात्मा गांधी के विचार पद्धति का व्यापक नाम है गांधीवाद। समाज और शासन के संगठन तथा जीवन के अन्य अनेक पक्षों के बारे में गांधी जी के अपने विचार थे जिसका प्रतिपादन उन्होंने अपनी दैनिक साधना के मध्य गुजरते हुए किया था।

महात्मा गांधी ने विभिन्न आदर्शों के मानक प्रस्तुत किए हैं। सर्वोदय गांधी जी का सामाजिक आदर्श है। सर्वोदय का अर्थ है-सब की उन्नति और इसका ध्येय है- ह्रदय परिवर्तन। ह्रदय परिवर्तन उन व्यक्तियों का जो समाज के अन्याय शोषण तथा अत्याचारी हैं जिसने समाज तथा समाज में रहने वाले व्यक्तियों को परेशान किया है। गांधीजी के मूल स्तंभ दो हैं- सत्य और अहिंसा। सत्य का दूसरा नाम ही उन्होंने ईश्वर को माना है और समस्त सृष्टि में एक ही तत्व की व्याप्ति स्वीकार कर ईश्वर एवं मनुष्य तथा मनुष्य एवं अन्य जीवो की एकता को स्वीकार किया है। इस अंतर्भूत एक तत्व के कारण ही उन्होंने माना है कि ''जो घटना जीवधारियों पर घटती है उसका प्रभाव समस्त जड़ पदार्थ तथा उसकी आत्मा पर पड़ता है। इस प्रकार सत्य के साक्षात्कार से सद्बुद्धि प्राप्त होती है और सद्बुद्धि से सब के प्रति हिंसा का भाव उत्पन्न होता है। इसीलिए उन्होंने अहिंसा को सत्य का दूसरा पहलू माना है। अहिंसा में केवल द्वेष का अभाव नहीं है, प्रेम की संप्राप्ति भी है। यह प्रेम स्वार्थ, मोह, आसक्ती आदि से भिन्न होता है। इस अहिंसा में बैर- त्याग, चराचर प्रेम और प्रेम और पूर्ण निष्काम भाव का समन्वय है। इस संबंध का पहला तत्व जैन बौद्ध अहिंसा का है, दूसरा वैष्णव भावना का

प्रसाद है और तीसरा तो स्पष्टतः गीता का प्रभाव है। ऐसी अहिंसा की प्राप्ति के लिए गांधीजी जो आत्म शुद्धि को आवश्यक मानते हैं और आत्म शुद्धि के लिए अन्य संतों की भांति अहम के त्याग को अनिवार्य माना है। अहंकार का त्याग तप और भगवान भक्ति से ही संभव है। तप के लिए राजभोग का त्याग है और आत्मशोधन करना पड़ता है तथा शक्ति भगवान का अटल विश्वास होने से प्राप्त होती है। यह तप या आत्मशुद्धि केवल उस व्यक्ति का ही कल्याण करती है बल्कि आत्मा की अखंडता के कारण संपूर्ण समाज को उन्नत बनाती है। इस तरह से गांधी जी के जीवन में तप और त्याग प्राधान्य है तथा भोग और आनंद का तिरस्कार। कला में भले ही उन्होंने शिव और सत्य पर बल दिया है, सुंदर को इन्होंने इन दोनों से या तो भिन्न माना है या अस्वीकार किया है। गांधीवादी विचारधारा में कलाओं के साथ नैतिक संबंध अभिन्न रूप से जुड़ा है। इस संबंध में उनके ऊपर रस्किन और टालस्टाय के विचारों की स्पष्ट छाप है।

गाँधी जी का सामाजिक दृष्टिकोण

बीसवीं सदी के गांधी सिर्फ राजनीतिक प्रदर्शन और समाज सुधारक के रूप में ही नहीं बल्कि एक ऐसे चिंतक एवं विचारक के रूप में भी हमारे सामने खड़े दिखाए देते हैं, जिनमें राजनीतिक धर्म, समाज संस्कृति और शिक्षा आदि विविध क्षेत्रों की अपनी एक विशिष्ट दृष्टि तो थी लेकिन कहना न होगा कि उनकी यह दृष्टि बीसवीं सदी पूर्वार्द्ध की राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिकता को तोड़कर उसका विस्तार करने में संभवतः हिचकिचाते थे। यह शायद इसीलिए आज जब हम गांधी को पढ़ते सुनते हैं तो कई जगह हमें बहुत तंग और अव्यवहारिक दिखाई देते हैं लेकिन कई जगह उनके विचार आज भी हमारा मार्गदर्शन करने की शक्ति रखते हैं।

अल्बर्ट आइंस्टाइन महात्मा गांधी और उनके अहिंसा के सिद्धांतों के बड़े प्रशंसक थे। यह महात्मा गांधी की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए नहीं थकते थे। अपने तमाम साक्षात्कारों और वक्तव्यों में वे महात्मा गांधी की प्रशंसा करते हुए दिखाई देते हैं। गांधीजी के 70 वें जन्मदिन पर उन्होंने एक वक्तव्य जारी किया था जिसका एक अंश यहां प्रस्तुत है- ‘‘अपने लोगों का एक नेता, किसी भी बाह्य ताकत के द्वारा असमर्थक एक राजनीतिक जिसकी सफलता तकनीकी उपकरणों और कलाबाजों पर निर्भर नहीं है, बल्कि उसके व्यक्तित्व की विश्वसनीय क्षमता पर निर्भर हैय एक विजय योद्धा ताकत के इस्तेमाल से हमेशा नफरत करता है एक बुद्धिमान और विनम्र इंसान, जो सुलझी हुई और अटल बारंबारता के साथ काम करता है, जिसने अपनी सारी ऊर्जा को अपने लोगों के उत्थान और उनकी सर्वस्व भलाई के लिए समर्पित कर दिया। एक इंसान जिसने पूरे यूरोप की क्रूरतापूर्ण निर्दयता पर साधारण मानव की गरिमा से डटकर सामना किया और इसी तरह हमेशा उच्चता और उत्कृष्टता के साथ उभरा है। आने वाली पीढ़ियां बहुत संभव है कि यह बहुत मुश्किल के साथ विश्वास करेंगे कि इस तरह के किसी मांस और खून वाले ने कभी धरती पर चहलकदमी की होगी।‘‘

गांधीजी ने मोक्ष के लिए ब्रम्हचर्य को अनिवार्य माना है। इसके अनुसार ब्रम्हचर्य मोक्ष का द्वार है और मोक्ष के द्वार में प्रवेश करने के लिए वे सदा अग्रसर रहें। गांधी जी की दृष्टि में ब्रह्मचर्य का अर्थ स्त्री जाति को अपमानित करने का नहीं था जैसा कि प्रायः साधु लोगों को मैं देखती हूं कि यदि किसी स्त्री का आंचल या परछाई उन पर पड़ जाए तो उनकी पवित्रता तुरंत नष्ट हो जाती है और

क्रोधित होकर चिल्लाने लगते हैं- मुझे फिर से स्नान करना पड़ेगा। गांधीजी का ब्रह्मचर्य ऐसा नहीं था। गांधीजी के ब्रह्मचर्य का अर्थ था ब्रह्म को पहचानने का मार्ग और इंद्रियों का निग्रह मुक्ता स्त्री से अलग पुरुष द्वारा मन-वचन और काया से विषय भोग का त्याग करना। गांधीजी के ब्रह्मचर्य के पहले उनके एकादश व्रतों के अन्य प्रयोग भी देखने होंगे- सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, सर्वधर्म समभाव, निर्भयता, शारीरिक श्रम, स्वदेशी, अस्तेय।

राष्ट्र निर्माता बापू के हर निर्माण के सपने में स्वावलंबन केंद्रीय था, फिर चाहे वह व्यक्ति निर्माण हो या समाज का। शिक्षा और शिक्षा व्यवस्था भी इसका अपवाद नहीं है यंग इंडिया में 2 अगस्त 1928 को लिखे अपने आलेख में शिक्षा के क्षेत्र में कैसा स्वावलंबन की उन्हें अपेक्षा थी, इसके बारे में लिखा है। अपनी बात को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि ‘‘यह सुझाव अक्सर दिया जाता है कि यदि शिक्षा अनिवार्य करनी हो या शिक्षा प्राप्त की इच्छा रखने वाले सब लड़के लड़कियों के लिए उसे सुलभ बनाना है तो हमारे स्कूल एवं कालेजों को पूरी नहीं तो करीब करीब स्वावलंबी हो जाना चाहिए। दान राजकीय सहायता अथवा विद्यार्थियों से ली जाने वाली फीस द्वारा उन्हें स्वावलंबी बनाया जा सकता है, लेकिन यहां वैसा स्वावलंबन इष्ट नहीं है। ‘‘अपनी बात को स्पष्ट करते हुए उन्होंने आगे लिखा है- ‘‘विद्यार्थियों को खुद कुछ ऐसा काम करना चाहिए जिससे अधिक आर्थिक सहायता प्राप्त हो और इस तरह स्कूल तथा कॉलेज स्वावलंबी बने। औद्योगिक तालीम को योग बना कर ही ऐसा किया जा सकता है। विद्यार्थियों को साहित्यिक तमिल के साथ-साथ औद्योगिक तामील भी मिलनी चाहिए। इस आवश्यकता के सिवा आजकल इस बात का महत्व अधिकाधिक स्वीकार किया जा रहा है। हमारे देश में तो औद्योगिक तालीम की आवश्यकता की शिक्षा स्वावलंबी बनने के लिए भी है लेकिन यह तभी हो सकता है जब हमारे विद्यार्थी श्रम का गौरव करना सीखें। अमेरिका जो दुनिया का सबसे धनी देश है और इसलिए जहां शिक्षा को स्वावलंबी बनाने की आवश्यकता कम से कम है यहाँ विद्यार्थी प्रायः अपनी पढ़ाई का पूरा अथवा आंशिक खर्च खुद कोई उद्योग करके निकालते हैं। अगर अमेरिका अपने स्कूल और कॉलेज इस तरह चलाता है कि विद्यार्थी अपने स्कूल या कॉलेज खर्च खुद निकालते हैं तो हमारे स्कूल और कॉलेज में तो इस बात की आवश्यकता और अधिक मानी जानी चाहिए।

महात्मा गांधी जी ने किस चीज की आवश्यकता 1928 में महसूस की थी आज की सुविधा भोगी परजीवी पीढ़ी जो छात्रवृत्ति और सुविधाओं की आदी हो चुकी है, इनको देखकर और ज्यादा अनुभव हो रही है।

वर्तमान समय में जिसे अर्थयुग कहा जाता है, बाजारवादी प्रणाली किस तरह के प्रलोभन से ग्राहकों को आकर्षित करती है, यह आज हर एक मध्यवर्गीय गृहस्थ जानता है और इस प्रलोभनों की शुरुआत विज्ञापन से होती है। किसी विज्ञापन में वस्तु की कमियों को बताने का सवाल नहीं है, गुणों की अतिरंजित चर्चा जरूरी है। यह अतिरंजना ही कृतिमता और आडंबर का रूप ले लेती है बाजार की प्रतिस्पर्धा के कारण विज्ञापनों में दूसरी वस्तुओं के प्रति एक हिंसक वृत्ति भी छुपी होती है। गांधीजी के अग्रलिखित कथन में इस उपभोक्तावाद का विकल्प निहित है- ‘‘मेरी आपसे प्रार्थना है कि उपभोक्ताओं की बात जरूरत से ज्यादा न सोंचे। आपको झीनी जापानी साड़ियां या धोतिया या जालीदार महीने सूती कपड़े दिखाकर उनको प्रलोभन देना उचित नहीं है। मेरा आपसे अनुरोध है कि

आप इसकी अपेक्षा उपभोक्ताओं में खादी मे कला देखने की रुचि पैदा करें। बहुत बढ़िया बने हुए रेशम के गुलाबी फूल में कोई कला नहीं है क्योंकि उनमें कोई जीवन नहीं है लेकिन बाग में पैदा हुआ फूल जिसकी बहुत ही पंखुड़ियां झड़ चुकी हों, सफाई से बनाए हुए नकली फूलों की अपेक्षा जो सजी हुई खिड़की में रखा हुआ है, किसी भी हालत में बढ़िया बैठता है। असली फूल में जीवन का संचार है।'' वे कृत्रिमता और आडंबर के मुकाबले 'सच्चाई की कला' का प्रस्ताव करते रहते हैं। वे रुचि पैदा करने की बात करते हैं। यह सहजता, नैसर्गिकता और जीवनम्रता की रूचि है। नकली फूल में जीवन नहीं है जबकि असली फूल में जीवन का संसार है।

गांधी जी भारत एवं भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के एक प्रमुख राजनैतिक एवं धार्मिक नेता थे। राजनीतिक एवं सामाजिक प्रगति के लिए अपने अहिंसक विरोध के सिद्धांत के लिए उन्हें अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हुई। विश्व पटल पर महात्मा गांधी एक नाम नहीं अपितु शांति और अहिंसा का प्रतीक है। गांधी के पूर्व भी शांति और अहिंसा के बारे में लोग जानते थे, परंतु उन्होंने जिस प्रकार सत्याग्रह, शांति और अहिंसा के रास्ते पर चलते हुए अंग्रेजों को भारत छोड़ने पर मजबूर कर दिया, उसका कोई दूसरा उदाहरण विश्व इतिहास में देखने को नहीं मिलता। तभी तो संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी वर्ष 2007 में गांधी जयंती को 'विश्व अहिंसा दिवस' के रूप में मनाए जाने की घोषणा की है।

निष्कर्ष

गांधी जी ने देश को सिर्फ अंग्रेजों से ही नहीं आजाद कराया बल्कि बुरी मानसिकताओं जैसे अशिक्षा, बाजारवाद, हिंसा, उपभोक्तावाद जैसी सोच से भी मुक्त कराकर नई सोच, नई विचारधारा को हमारे सम्मुख प्रकट कर नए जीवन शैली की दीक्षा प्रदान किया है। अपनी करनी और कथनी की एकता में ये कबीर मालूम पड़ते हैं। इनके विचार इनके दैनिक क्रियाकलापों में दिखाई पड़ते हैं। गांधी का आदर्श आज भी हमारे समाज के लिए और हमारे देश के लिए प्रासंगिक है।

संदर्भ

गांधी, एम. के. (1997). कलेक्टेड वर्क्स ऑफ महात्मा गांधी. नई दिल्ली: गवर्नमेंट प्रिंटर।

गांधी, मोहनदास के., सत्याग्रह इन साउथ अफ्रीका, अहमदाबाद: नवजीवन।

गांधी, एम. के. (1993). द स्टोरी ऑफ माई एक्सपेरिमेंट्स विद ट्रूथ, बोस्टन: बीकन प्रेस।

पारेख, भी. एवं गांधी. (1997). न्यूयॉर्क: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

ऑनलाइन स्त्रोत

http://www.nonviolent-resistance.info/

https://time.com/time/time/time100/poc/runnerup2.html

https://gandhiinstitute.org/

https://www.gandhiserve.net/